डॉ. वीरेन्द्र एम. तिवारी वर्तमान में सीएसआईआर-उत्तर पूर्व विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर-एनईआईएसटी), जोरहाट, भारत के निदेशकऔर जेसी बोस नेशनल फेलो के पद पर कार्यरत हैं। वे भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA) के उपाध्यक्ष और ७० सदस्य देशों के भूविज्ञान संघ IUGG ब्यूरो के सदस्य भी हैं। डॉ. तिवारी २०१६ से २०२२ तक सीएसआईआर-एनजीआरआई के निदेशक और २०१५-१६ में एनसीईएसएस(NCESS), तिरुवनंतपुरम, भारत के निदेशक रह चुके हैं।

डॉ. तिवारी ने १९९२ में बीएचयू(BHU), वाराणसी से भूभौतिकी में एम.एससी. (टेक.) और १९९८ में पीएचडी (PH.D) (भूभौतिकी) (Geophysics) की उपाधि प्राप्त की। उनके विशेषज्ञता के क्षेत्र ग्रेविमेट्री, हाइड्रोलॉजी और भूगतिकी हैं। डॉ. तिवारी का शोध मुख्य रूप से उपसतही द्रव्यमान वितरण और द्रव्यमान परिवहन को समझने पर केंद्रित है, जो भारतीय भूआवरण के विभिन्न भूगर्भीय सेटिंग्स की संरचना और गतिशीलता, भारतीय उपमहाद्वीप में जल संग्रहण में परिवर्तन, और उप-बैसाल्टिक तलछटों की मैपिंग जैसे वैज्ञानिक और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए प्रासंगिक हैं।

उनकी वर्तमान रुचि बड़े पैमाने पर जल संसाधनों के प्रबंधन के लिए भूभौतिकीय डेटा सेट को हाइड्रोलॉजिक मॉडलिंग के साथ एकीकृत करने में है।

डॉ. तिवारी को नेशनल मेरिट स्कॉलरशिप, ओएनजीसी-एईजी बेस्ट थीसिस अवार्ड, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA), सीएसआईआर और उत्तर प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के युवा वैज्ञानिक पुरस्कार, आईजीयू का कृष्णन गोल्ड मेडल, भारत सरकार के खनन मंत्रालय और पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के राष्ट्रीय पुरस्कार और भारत की सभी तीन राष्ट्रीय विज्ञान अकादमियों की फैलोशिप प्राप्त हुई हैं। वे कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समितियों के सदस्य भी हैं।